



## बिहार में समावेशी विकास का बदलता स्वरूप (2005 से वर्तमान तक): एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ब्यूटी कुमारी

शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20286756>

Corresponding Author: ब्यूटी कुमारी

### सारांश

बिहार भारत के उन राज्यों में शामिल है जिसने वर्ष 2005 के बाद विकास की दिशा में उल्लेखनीय परिवर्तन का अनुभव किया है। लंबे समय तक गरीबी, बेरोजगारी, अविकसित आधारभूत संरचना, निम्न शैक्षिक स्तर तथा सामाजिक असमानताओं जैसी समस्याओं से जूझने वाला बिहार अब समावेशी विकास की दिशा में आगे बढ़ता हुआ दिखाई देता है। समावेशी विकास का आशय केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसा विकास जिसमें समाज के सभी वर्गों—गरीब, महिलाएँ, दलित, पिछड़े वर्ग, अल्पसंख्यक तथा ग्रामीण समुदाय—को विकास की प्रक्रिया एवं उसके लाभों में समान भागीदारी प्राप्त हो।

यह शोध आलेख बिहार में 2005 से वर्तमान तक समावेशी विकास के बदलते स्वरूप का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, कृषि, रोजगार, आधारभूत संरचना तथा सामाजिक न्याय जैसे प्रमुख आयामों का विश्लेषण किया गया है। यह शोध मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिनका संकलन बिहार आर्थिक सर्वेक्षण, नीति आयोग, जनगणना रिपोर्ट, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण तथा विभिन्न शोध पत्रों एवं पुस्तकों से किया गया है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बिहार में सड़क, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तथा महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। पंचायतों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण, जीविका कार्यक्रम, मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना तथा ग्रामीण विकास योजनाओं ने सामाजिक परिवर्तन को गति प्रदान की है। इसके बावजूद बेरोजगारी, पलायन, औद्योगिक पिछड़ापन, क्षेत्रीय असमानता तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की कमी जैसी चुनौतियाँ अब भी विद्यमान हैं।

अतः यह अध्ययन निष्कर्षतः दर्शाता है कि बिहार में समावेशी विकास की प्रक्रिया ने नई दिशा और गति प्राप्त की है, किन्तु इसे अधिक प्रभावी एवं स्थायी बनाने के लिए रोजगारोन्मुख औद्योगिक विकास, मानव संसाधन निर्माण तथा क्षेत्रीय संतुलन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

मूल शब्द: समावेशी विकास, बिहार, सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण, आर्थिक विकास, ग्रामीण विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, गरीबी

### प्रस्तावना

बिहार भारत का एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य है। प्राचीन काल में यह ज्ञान, शिक्षा और सभ्यता का प्रमुख केंद्र रहा है। नालंदा और विक्रमशिला जैसे

विश्वविख्यात विश्वविद्यालयों ने बिहार को वैश्विक पहचान दिलाई थी। किन्तु आधुनिक काल में बिहार आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े राज्यों की श्रेणी में शामिल हो गया। गरीबी, बेरोजगारी, खराब आधारभूत संरचना,

औद्योगिक पिछड़ापन, निम्न शिक्षा स्तर तथा सामाजिक असमानताओं ने राज्य के विकास को लंबे समय तक बाधित किया।

वर्ष 2005 के बाद बिहार की विकास यात्रा में एक नया परिवर्तन दिखाई देता है। राज्य सरकार ने सुशासन, आधारभूत संरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सामाजिक न्याय को प्राथमिकता दी। परिणामस्वरूप सड़क निर्माण, ग्रामीण विद्युतीकरण, विद्यालयों में नामांकन वृद्धि, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार तथा महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई।

इसी संदर्भ में “समावेशी विकास” की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। समावेशी विकास का अर्थ ऐसा विकास है जिसमें समाज का प्रत्येक वर्ग विकास प्रक्रिया का सहभागी बने और उसके लाभों तक समान पहुँच प्राप्त करे। यह केवल आर्थिक वृद्धि नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समान अवसर, मानव विकास तथा जीवन स्तर में सुधार की प्रक्रिया है।

बिहार जैसे राज्य में समावेशी विकास का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि यहाँ की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और कृषि पर निर्भर है। साथ ही जातीय एवं आर्थिक असमानताएँ भी लंबे समय तक विकास में बाधक रही हैं। इसलिए यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि 2005 के बाद बिहार में समावेशी विकास का स्वरूप किस प्रकार बदला है और उसका प्रभाव समाज के विभिन्न वर्गों पर किस प्रकार पड़ा है।

## उद्देश्य

**इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—**

1. बिहार में 2005 से वर्तमान तक समावेशी विकास के स्वरूप का अध्ययन करना।
2. शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि तथा आधारभूत संरचना में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
3. महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक न्याय की स्थिति का मूल्यांकन करना।
4. बिहार में समावेशी विकास की प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
5. राज्य में समावेशी विकास को मजबूत बनाने हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

## साहित्य समीक्षा

समावेशी विकास की अवधारणा पर अनेक विद्वानों एवं संस्थाओं ने महत्वपूर्ण अध्ययन किए हैं। इन अध्ययनों से

यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक विकास तभी सार्थक माना जा सकता है जब उसका लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचे।

अमर्त्य सेन (1999) <sup>[1]</sup> ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Development as Freedom में विकास को मानव स्वतंत्रता और अवसरों के विस्तार से जोड़ा है। उनके अनुसार शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक न्याय विकास के मुख्य आधार हैं।

महबूब-उल-हक (1995) <sup>[2]</sup> ने मानव विकास की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए कहा कि विकास का वास्तविक उद्देश्य मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार होना चाहिए। उन्होंने आय के साथ-साथ शिक्षा और स्वास्थ्य को भी विकास का महत्वपूर्ण संकेतक माना।

विश्व बैंक (2009) <sup>[3]</sup> की रिपोर्ट के अनुसार समावेशी विकास ऐसी प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक अवसरों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाया जाता है तथा गरीबी एवं असमानता को कम करने का प्रयास किया जाता है।

बिहार के संदर्भ में बिहार आर्थिक सर्वेक्षण तथा नीति आयोग की रिपोर्टों में उल्लेख किया गया है कि 2005 के बाद राज्य में सड़क, बिजली, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हुआ है। पंचायतों में महिलाओं को आरक्षण तथा स्वयं सहायता समूहों ने सामाजिक परिवर्तन को गति प्रदान की है।

कुमार एवं सिंह (2018) <sup>[7]</sup> ने अपने अध्ययन में पाया कि बिहार का “जीविका कार्यक्रम” ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बना है। इससे महिलाओं की आय, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक भागीदारी में वृद्धि हुई है।

शर्मा (2020) <sup>[8]</sup> के अनुसार मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना और मध्याह्न भोजन योजना ने विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हालाँकि कई अध्ययनों में यह भी उल्लेख किया गया है कि बिहार में बेरोजगारी, पलायन, औद्योगिक पिछड़ापन तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की कमी अब भी गंभीर चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

## परिकल्पना

**इस अध्ययन की प्रमुख परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं—**

1. वर्ष 2005 के बाद बिहार में समावेशी विकास की प्रक्रिया में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।
2. शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आधारभूत संरचना में सुधार ने

सामाजिक विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

3. महिला सशक्तिकरण योजनाओं ने महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक भागीदारी को बढ़ाया है।
4. आर्थिक विकास के बावजूद बेरोजगारी एवं पलायन की समस्या अभी भी बनी हुई है।

### शोध पद्धति

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन हेतु आवश्यक आँकड़ों एवं सूचनाओं का संकलन विभिन्न विश्वसनीय स्रोतों से किया गया है।

### Data Sources

1. बिहार आर्थिक सर्वेक्षण
2. नीति आयोग की रिपोर्टें
3. जनगणना रिपोर्टें
4. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS)
5. विश्व बैंक एवं UNDP रिपोर्टें
6. विभिन्न शोध पत्र एवं पुस्तकें
7. सरकारी योजनाओं की वार्षिक रिपोर्टें

### Research Design

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें 2005 से वर्तमान तक बिहार के विकास के विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

### Scope of the study

यह अध्ययन बिहार राज्य तक सीमित है तथा समावेशी विकास के प्रमुख आयामों—शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार, महिला सशक्तिकरण एवं आधारभूत संरचना—का विश्लेषण करता है।

### Analysis and Discussion

#### 1. आधारभूत संरचना का विकास

वर्ष 2005 के बाद बिहार में सड़क, पुल एवं परिवहन व्यवस्था में उल्लेखनीय सुधार हुआ। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना एवं राज्य सरकार की योजनाओं ने ग्रामीण क्षेत्रों को मुख्य मार्गों से जोड़ा। इससे शिक्षा, स्वास्थ्य एवं बाजार तक पहुँच आसान हुई।

बिजली आपूर्ति में भी महत्वपूर्ण सुधार हुआ। ग्रामीण

विद्युतीकरण योजनाओं ने गाँवों तक बिजली पहुँचाने में सहायता की। इससे घरेलू जीवन के साथ-साथ छोटे उद्योगों एवं शिक्षा को भी लाभ मिला।

#### 2. शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन

बिहार में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन दिखाई देता है। विद्यालयों की संख्या में वृद्धि, शिक्षकों की नियुक्ति, छात्रवृत्ति योजनाएँ तथा साइकिल एवं पोशाक योजना ने विद्यालयी शिक्षा को प्रोत्साहित किया।

मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना ने विशेष रूप से बालिका शिक्षा को नई दिशा दी। इससे लड़कियों की विद्यालयों में उपस्थिति बढ़ी तथा सामाजिक जागरूकता में सुधार हुआ।

मध्याह्न भोजन योजना ने गरीब परिवारों के बच्चों को विद्यालयों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालाँकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अभी भी एक चुनौती बनी हुई है।

#### 3. स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार

स्वास्थ्य क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या में वृद्धि हुई तथा संस्थागत प्रसव को बढ़ावा दिया गया। आशा कार्यकर्ताओं एवं जननी सुरक्षा योजना के माध्यम से मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी आई।

कोविड-19 महामारी ने स्वास्थ्य सेवाओं की सीमाओं को उजागर किया, जिसके बाद स्वास्थ्य आधारभूत संरचना को मजबूत करने की आवश्यकता अधिक महसूस की गई।

#### 4. महिला सशक्तिकरण

महिलाओं को पंचायतों में 50 प्रतिशत आरक्षण देना बिहार की महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है। इससे महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई।

“जीविका” कार्यक्रम ने ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएँ बचत, ऋण एवं स्वरोजगार गतिविधियों से जुड़ीं।

#### 5. कृषि एवं ग्रामीण विकास

कृषि बिहार की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। कृषि रोडमैप, सिंचाई योजनाओं एवं आधुनिक तकनीकों के उपयोग से कृषि उत्पादकता में सुधार हुआ।

डेयरी, मत्स्य पालन एवं बागवानी को भी प्रोत्साहन मिला। ग्रामीण सड़क एवं पेयजल योजनाओं ने ग्रामीण जीवन स्तर में सुधार किया।

## 6. रोजगार एवं पलायन

रोजगार की कमी बिहार की प्रमुख समस्या बनी हुई है। औद्योगिक विकास की कमी के कारण बड़ी संख्या में युवाओं का अन्य राज्यों की ओर पलायन जारी है। मनरेगा एवं कौशल विकास योजनाओं ने कुछ हद तक रोजगार उपलब्ध कराया है, लेकिन स्थायी रोजगार की समस्या अब भी गंभीर है।

## 7. सामाजिक न्याय एवं कमजोर वर्ग

महादलित विकास मिशन एवं अल्पसंख्यक कल्याण योजनाओं ने कमजोर वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया है। पंचायतों में आरक्षण ने दलितों, पिछड़ों एवं महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई है। फिर भी जातीय असमानता एवं सामाजिक विभाजन पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं।

## Findings of the Study

अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए—

1. बिहार में 2005 के बाद आधारभूत संरचना में व्यापक सुधार हुआ है।
2. शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच में वृद्धि हुई है।
3. महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।
4. पंचायतों में आरक्षण ने सामाजिक एवं राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाया है।
5. ग्रामीण विकास योजनाओं ने जीवन स्तर में सुधार किया है।
6. बेरोजगारी एवं पलायन अभी भी बड़ी चुनौतियाँ हैं।
7. औद्योगिक विकास की कमी राज्य की आर्थिक प्रगति को सीमित करती है।
8. क्षेत्रीय असमानताएँ अभी भी विद्यमान हैं।

## सुझाव

1. कृषि आधारित उद्योगों एवं लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाए।
2. कौशल विकास कार्यक्रमों को रोजगार से जोड़ा जाए।
3. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं पर विशेष ध्यान दिया जाए।
4. महिलाओं की उद्यमिता को बढ़ावा दिया जाए।
5. पिछड़े क्षेत्रों के लिए विशेष विकास योजनाएँ लागू की जाएँ।
6. बाढ़ एवं सूखा प्रबंधन हेतु दीर्घकालिक नीति बनाई

जाए।

7. डिजिटल साक्षरता एवं इंटरनेट सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
8. स्थानीय संसाधनों पर आधारित रोजगार सृजन को प्रोत्साहित किया जाए।
9. प्रशासनिक पारदर्शिता एवं जवाबदेही को मजबूत किया जाए।
10. पर्यावरणीय संतुलन एवं सतत विकास को प्राथमिकता दी जाए।

## निष्कर्ष

बिहार में 2005 से वर्तमान तक समावेशी विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला है। राज्य ने आधारभूत संरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक न्याय के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। महिलाओं, दलितों, पिछड़े वर्गों एवं ग्रामीण समुदायों की विकास प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ी है।

इसके बावजूद बेरोजगारी, पलायन, औद्योगिक पिछड़ापन तथा सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। समावेशी विकास तभी सफल माना जाएगा जब समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं सम्मानजनक जीवन की समान सुविधा प्राप्त हो। भविष्य में बिहार को रोजगारोन्मुख औद्योगिक विकास, गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधन निर्माण तथा क्षेत्रीय संतुलन पर विशेष ध्यान देना होगा। यदि राज्य आर्थिक वृद्धि को सामाजिक न्याय एवं सतत विकास के साथ जोड़कर आगे बढ़ता है, तो बिहार समावेशी विकास का एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

## संदर्भ

1. सेन, अमर्त्य. डेवलपमेंट ऐज फ्रीडम। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।, 1999.
2. हक, महबूब-उल. रिफ्लेक्शन्स ऑन ह्यूमन डेवलपमेंट। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।, 1995.
3. विश्व बैंक. समावेशी विकास एवं विकास रिपोर्ट। विश्व बैंक प्रकाशन।, 2009.
4. बिहार आर्थिक सर्वेक्षण (विभिन्न अंक)। बिहार सरकार, वित्त विभाग।
5. नीति आयोग। राज्य विकास संबंधी रिपोर्टें। भारत सरकार।
6. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) रिपोर्ट। भारत सरकार।

7. कुमार, आर. एवं सिंह, पी. “बिहार में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण।” ग्रामीण विकास जर्नल, 2018.
8. शर्मा, ए. “2005 के बाद बिहार में शैक्षिक विकास।” इंडियन जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज़, 2020.
9. भारत की जनगणना रिपोर्ट। भारत सरकार।
10. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)। मानव विकास रिपोर्ट।
11. बिहार सरकार। आर्थिक समीक्षा एवं विकास रिपोर्ट। पटना।
12. सिंह, एस. “बिहार में ग्रामीण विकास और सामाजिक परिवर्तन।” भारतीय आर्थिक समीक्षा, 2019.
13. मिश्रा, वी. “बिहार में समावेशी विकास की चुनौतियाँ।” सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 2021.
14. योजना आयोग (पूर्व)। समावेशी विकास पर रिपोर्ट। भारत सरकार।
15. झा, आर. “बिहार में महिला सशक्तिकरण और पंचायत व्यवस्था।” लोक प्रशासन पत्रिका, 2017.

#### **Creative Commons (CC) License**

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.